ICSSR

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

QUOT RAMI TOT ARBORES

राष्ट्रीय संगोष्ठी

23-25 मार्च 2023

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, जन चेतना की निर्मिति और हिंदी पत्रिकाएँ

(विशेष संदर्भ : 'माधुरी' और 'चाँद' के प्रकाशनारंभ की शताब्दी स्मृति)

आयोजक

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
उत्तर प्रदेश

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद
शिक्षा मंत्रालय
नई दिल्ली

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

इस विभाग की स्थापना सन् 1924 ई. में हुई थी। हिंदी भाषा और साहित्य के गंभीर अध्येता डॉ. धीरेंद्र वर्मा इस विभाग के संस्थापक अध्यक्ष थे। यह विभाग अपने अध्यापकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की प्रतिभा, ज्ञान एवं उपलब्धियों से देश भर में प्रतिष्ठा का पात्र रहा है। देश भर में विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण के पाठ्यक्रम एवं स्वरूप निर्धारण में इस विभाग की केंद्रीय भूमिका रही है। रचनात्मक लेखन एवं ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों में इस विभाग की उपलब्धियाँ स्वयंसिद्ध हैं। हिंदी आलोचना, साहित्येतिहास लेखन एवं शोध के क्षेत्र में डॉ. धीरेंद्र वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा, डॉ. पारसनाथ तिवारी, डॉ. रघुवंश, डॉ. कामिल बुल्के, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र, डॉ. दूधनाथ सिंह; भाषा विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. उदयनारायण तिवारी, डॉ. रामसिंह तोमर, डॉ. हरदेव बाहरी; पाठ संपादन के क्षेत्र में डॉ. माता प्रसाद गुप्त, तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में डॉ. मोहन अवस्थी, नाटक-एकांकी के क्षेत्र में डॉ. रामकुमार वर्मा, नई कविता के क्षेत्र में डॉ. जगदीश गुप्त और समकालीन कविता के क्षेत्र में डॉ. राजेंद्र कुमार आदि का योगदान हिंदी की अकादमिक दुनिया में कीर्तिस्तंभ के रूप में सर्वस्वीकृत है। रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में भी इस विभाग के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ महनीय हैं। शमशेर बहादुर सिंह, दुष्यंत कुमार, कमलेश्वर, मार्कंडेय, धर्मवीर भारती, ज्ञानरंजन, अब्दुल बिस्मिल्लाह जैसे लेखकों का इस विभाग से जुड़ाव रहा है। हिंदी विभाग इस उन्नत एवं गौरवशाली परंपरा की स्मृतियों को संरक्षित रखते हुए मौजूदा समय में नवीन ज्ञान के सृजन एवं प्रसार के लिए कटिबद्ध है।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, जन चेतना की निर्मिति और हिंदी पत्रिकाएँ

(विशेष संदर्भ : 'माधुरी' और 'चाँद' के प्रकाशनारंभ की शताब्दी स्मृति)

आज़ादी के पचहत्तरवें वर्ष में यह राष्ट्रीय सेमिनार विशेष उद्देश्य से आयोजित है। इस सेमिनार के केंद्र में हिंदी की साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्रिकाएँ हैं। उल्लेखनीय है कि अंग्रेजी राज की अनीतियों और शोषण को उजागर करने, देश की विभिन्न समस्याओं और ज़रूरतों को आवाज़ देने तथा भारतीय जनता की मानसिक निर्मिति और बौद्धिक विकास में उन्नीसवीं-बीसवीं सदी की 'कविवचन सुधा', 'हिंदी प्रदीप', 'ब्राह्मण', 'सरस्वती', 'प्रताप', 'मर्यादा', 'प्रभा', 'स्त्री दर्पण', 'माधुरी', 'चाँद', 'सुधा', 'विशाल भारत' जैसी पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उनमें प्रकाशित केवल साहित्य नहीं; साहित्येतर सामग्री, यथा-कार्टून, विज्ञापन, स्वास्थ्य चर्चा आदि ने भी पाठकों को सचेत तरीके से जाग्रत किया और उनमें राष्ट्रीयता का भाव भरा। हालाँकि, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास लेखन और जन जागरण के विश्लेषण के क्रम में इस ठोस, प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण स्रोत की भरसक उपेक्षा हुई है। जबकि उन पत्रिकाओं से गुजरते हुए हम उस दौर के अनेक अनाम-अख्यात सेनानियों, लेखकों, बौद्धिकों, पत्रकारों और संपादकों के संघर्ष एवं योगदान से परिचित हो सकते हैं। हम अनेक विस्मृत नायकों का पुनः मूल्यांकन कर सकते हैं। साथ ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की उपलब्धियों और सीमाओं, दोनों से बेहद भरोसेमंद तरीके से रू-ब-रू हो सकते हैं।

सन् 1922 में लखनऊ से **'माधुरी'** तथा प्रयाग से **'चाँद'** का प्रकाशन आरंभ हुआ था। आज़ादी का पचहत्तरवाँ साल इन दोनों पत्रिकाओं की शुरुआत का सौवाँ साल भी है। ऐसे में यह आयोजन इन दोनों पत्रिकाओं के प्रकाशनारंभ की **'शताब्दी स्मृति'** के साथ-साथ जन चेतना के निर्माण में उन तमाम पत्रिकाओं के अवदान को रेखांकित करने का प्रयास है।

सेमिनार के प्रमुख उपविषय निम्न हैं :

- हिंदी पत्रिकाओं में गाँधी, उनके सहयोगी एवं अहिंसा की विचारधारा
- हिंदी पत्रिकाओं में क्रांतिकारियों एवं उनकी विचारधारा की उपस्थिति
- ब्रिटिश राज का दमन, प्रेस एक्ट, प्रतिबंध और हिंदी पत्रिकाएँ
- हिंदी पत्रिकाओं में प्रकाशित विज्ञापनों एवं कार्टूनों में आज़ादी की अनुगूँज
- राष्ट्रीय आंदोलन में स्त्री विषयक प्रश्न एवं हिंदी पत्रिकाएँ
- जाति, धर्म और भाषा के सवाल एवं हिंदी पत्रिकाएँ
- हिंदी पत्रिकाओं में इतिहास, विज्ञान एवं ज्ञान के अन्य अनुशासन
- हिंदी पत्रिकाओं में विश्व
- जन चेतना की निर्मिति में 'माधुरी' और 'चाँद' की भूमिका

इस सेमिनार के लिए आलेख/शोधालेख 15 मार्च 2023 तक ईमेल के द्वारा भेजे जा सकते हैं। आलेख/शोधालेख का फॉण्ट कृतिदेव 010 अथवा मंगल (यूनीकोड) हो तो सुविधा होगी।

सेमिनार में आलेख/शोधालेख के वाचन के लिए चयनित लेखकों/लेखिकाओं को सेमिनार से पूर्व सूचित कर दिया जाएगा। सेमिनार के लिए पंजीयन शुल्क : विद्यार्थी -300 रु., शोधार्थी -500 रु., शिक्षक एवं अन्य प्रतिभागी-800 रु.।

ऑनलाइन पंजीयन लिंक : https://forms.gle/m3Qz2DyknXYf5VVf8

पंजीयन शुल्क ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण
A/c No. : 41688448603, Bank : SBI, University Branch
IFS Code : SBIN0001621

संपर्क : 9934260232/9219575145/uoahindiseminar@gmail.com

संरक्षक

प्रो. संगीता श्रीवास्तव

कुलपति

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

अध्यक्ष

प्रो. प्रणय कृष्ण

विभागाध्यक्ष, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

संयोजक

आशुतोष पार्थेश्वर

सह आचार्य, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज